पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-डी.एल. (एन.) 05/0084/09-11

इस अंक का मूल्य 2 रुपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-110007, चलभाष : 9810117464, 9868051444

दक्षिण दिल्ली क्षेत्र

आर्य कार्यकर्ता बैठक

रविवार, 24 अप्रैल, 2011
सायं 5.00 बजे
आर्य समाज, ग्रेटर कैलाश,
पार्ट-1, नई दिल्ली-48
अध्यक्षता : श्री रामकृष्ण तनेजा
आप सादर आमंत्रित हैं
-डॉ. अनिल आर्य, संयोजक

वर्ष-27 अंक-22 बैशाख-2068 दयानन्दाब्द 188 16 अप्रैल से 30 अप्रैल 2011 (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.

Website : www.aryayuvakparishad.com aryayouthgroup@yahoogroups.com E-mail : aryayouth@gmail.com

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में 137वां आर्य समाज स्थापना दिवस सम्पन्न

प्राचीन श्रेष्ठ संस्कृति का पुनर्जागरण आर्य समाज ने किया -डॉ. विजय कुमार मल्होत्रा का आह्वान

डॉ. विजय कुमार मल्होत्रा को शाल व स्वामी दयानन्द के चित्र से सम्मानित करते बाएं से डॉ. डी.के. गर्ग, स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती, डॉ. अनिल आर्य व प्रकाशवीर शास्त्री

नई दिल्ली। सोमवार, 4 अप्रैल 2011, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् नई दिल्ली के तत्वावधान में नववर्ष संवत् 2068 व 137वें आर्य समाज स्थापना दिवस पर 6, रायसीना रोड पर भव्य समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में दिल्ली के कौने-कौने से सैकड़ों आर्य समाजियों ने भाग लेकर नववर्ष की शुभकामनाओं का आदान-प्रदान किया।

डॉ. विजय कुमार मल्होत्रा (नेता विपक्ष, दिल्ली विधान सभा) ने कहा कि महर्षि दयानन्द पुनर्जागरण के प्रतीक थे। उन्होंने समाज में व्याप्त कुरीतियों व पाखंड-अंधविश्वास पर सीधा कुठाराघात किया। उन्होंने अपने विचारों के प्रचार-प्रसार के लिये आर्य समाज की स्थापना की। उसी समाज ने प्राचीन भारतीय संस्कृति को स्थापित करने का कार्य किया। आगे जाकर उस विचारधारा ने देश की आजादी में उल्लेखनीय योगदान दिया।

डॉ. मल्होत्रा ने कहा कि आज की युवा पीढ़ी जिस पाश्चात्य संस्कृति को उन्नति मान रही है वह केवल नग्नता को बढ़ावा दे रही है। आर्य समाज ने पुनः सार्वभौमिक नियमों की स्थापना का कार्य करना है। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अनिल आर्य ने कहा कि हमें आज के हिन्दू नववर्ष पर गर्व करना चाहिए। हमारी पुरातन भारतीय संस्कृति समाज को जोड़ने का कार्य करती है। स्वामी दिव्यानन्द जी सरस्वती (हरिद्वार) ने कहा कि हमें अपसंस्कृति से बचना चाहिए और अपनी सन्तानों को अच्छे संस्कार देने चाहिए।

समारोह का शुभारम्भ यज्ञ के साथ हुआ और परिषद् के महामन्त्री आचार्य महेन्द्र भाई ने दुर्व्यसन छोड़ने का आह्वान किया। शिक्षा बचाओ आन्दोलन के राष्ट्रीय संयोजक दीनानाथ बत्रा ने कहा कि आज की युवा पीढ़ी को शिक्षा द्वारा भ्रमित करने का प्रयास चल रहा है, जिसके प्रति सजग रहने की आवश्यकता है।

इस अवसर पर सुकृति भटनागर के मधुर भजन हुए। शिक्षाविद् डॉ. डी.के. गर्ग, राजीव कुमार (परम ग्रुप), सूरतसिंह एडवोकेट (राष्ट्रपति बराक ओबामा के सहपाठी), सुरेन्द्र कोहली (आजादपुर मंडी), प्रि. अंजू महरोत्रा, प्रवीन आर्य (गाजियाबाद), भारतेन्द्र, डॉ. चन्द्रप्रभा आर्या, राजेश मेहन्दीरत्ता, अमीरचन्द रखेजा, सी.एल. मोहन, हरबीर सिंह, नरेश सैनी, रविन्द्र मेहता, रमेश गाडी, रविदेव गुप्ता, महेन्द्र टांक, रमेश भटनागर आदि ने अपने विचार प्रस्तुत किये। आर्य नेता यशोवीर आर्य, राकेश भटनागर, दुर्गेश आर्य, सन्तोष शास्त्री, चतरसिंह नागर, सुदेश भगत, देवेन्द्र भगत, प्रकाशवीर शास्त्री, जीवन प्रकाश शास्त्री, गोपाल जैन, अनिल मित्तल, विम्मी अरोड़ा, आदर्श सहगल आदि विशेष रूप से उपस्थित थे।

137वें आर्य समाज स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर सांसद डॉ. मुरली मनोहर जोशी के निवास 6, रायसीना रोड, नई दिल्ली में उपस्थित आर्य जन

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् राजस्थान के तत्वावधान में
विशाल युवक चरित्र निर्माण शिविर

दिनांक 30 मई 2011 से रविवार 5 जून, 2011 तक
स्थान : डी.वी.एम. पब्लिक स्कूल, नारनौल रोड, बहरोड़, अलवर
कक्षा 6 से 12वीं तक के युवक भाग ले सकते हैं।
सम्पर्क करें : श्री रामकृष्ण शास्त्री, संयोजक, मो. 09461405709

आर्य युवक परिषद् हरियाणा के तत्वावधान में
विशाल युवक चरित्र निर्माण शिविर

दिनांक 13 जून 2011 से रविवार, 19 जून, 2011 तक
स्थान : डी.ए.वी. स्कूल, न्यू कॉलोनी, पलवल, हरियाणा
कक्षा 6 से 12वीं तक के युवक भाग ले सकते हैं।
सम्पर्क करें : स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती, शिविराध्यक्ष, मो. 09416267482

अयोध्या नगरी : भ्रमण व विश्लेषण –रविदेव गुप्ता

अभी कुछ समय पूर्व ही परिवार के साथ चिर संचित अभिलाषा को लेकर अयोध्या नगरी जाने का सुअवसर प्राप्त हुआ। श्रीहरि सत्संग समिति द्वारा संचालित वनवासी कथाकारों के प्रशिक्षण केन्द्र को देखने जाना था जहां 35 युवतियां प्रशिक्षण प्राप्त कर रही हैं। स्टेशन पर उतरते हुए बड़ा रोमांच था इस पवित्र व पुरातन नगरी को देखने का। गत दशक में यह क्षेत्र अनायास ही अन्तर्राष्ट्रीय महत्व का बन भी गया है। हिन्दू समाज के आराध्य भगवान श्रीराम की जन्मभूमि जो है यह।

स्टेशन से अपने निवास स्थल तक कई बाजार व गलियों से होकर गुजरते हुए आभास हुआ कि नगरी वास्तव में अति प्राचीन व ऐतिहासिक है। मकान, दुकान व असंख्य मंदिर आज भी पुरातत्व विभाग की धरोहर से प्रतीत होते हैं। किंचित आश्चर्य व खेद यह देखकर हुआ कि वहां के निवासियों ने संभवत: कभी भी अपने भवनों के रखरखाव व मरम्मत आदि की आवश्यकता ही नहीं समझी। परिणामत: सारे ही मकानों-दुकानों की दीवारें भुरभुरा गई हैं और लगभग खस्ताहाल हैं।

विकास का कहीं भी नामोनिशान नहीं दिखा और कुछेक नये निर्माणों को छोड़कर शेष सारा नगर शायद अपनी इसी घोर दरिद्रता में ही सुख व गौरव की अनुभूति कर रहा प्रतीत होता है। इस घोर जड़ता के बीच यदि कोई चेतनता दिखी तो वहां पर फैले हुए वानर-समाज के आतंक की। बंदरों के झुंड झुंड हर मकान की छत पर उन्मुक्त विचरण करते हुए राह चलते प्रत्येक यात्री के लिए चुनौती बने हुए हैं। लोगों ने छतों/टीनों पर नागफनी के पेड़ स्वयं उगाये हुए हैं। जो एक विचित्र दृश्य उपस्थित करते हैं। इस प्राचीनता-जन्य घोर दरिद्रता के बीच भी सभी निवासियों के चेहरों पर अपूर्व शांति व संतोष देखकर सहसा ही इस तीर्थ स्थान की महिमा को प्रणाम करने का मन हो आया।

दर्शनीय स्थलों के भ्रमण करते हुए भी सम्पूर्ण समाज व प्रशासन की वही निष्क्रियता देखकर मन आश्चर्य चकित हो गया। गुप्त घाट, गोला घाट व अन्य सभी घाटों की उपेक्षित दशा व गन्दगी का साम्राज्य देखकर मन खिन्न हो गया। मणि पर्वत की उपेक्षित जर्जर हालत देखकर मन में विस्मय हो गया। ऐसा क्या कारण है कि इस क्षेत्र के इतने चर्चित होने के बाद भी स्थानीय जनता व प्रशासन इस कदर निष्क्रिय व संवेदनशून्य होकर बैठा है और सम्भवत: इसी कारण से बहुचर्चित अयोध्या नगरी तीर्थ यात्रियों के आकर्षण का केन्द्र न बन सकी। समाज को भी क्या काठ मार गया है कि वह भी इस ओर पूर्ण रूप से उदासीन होकर अपनी दरिद्रता में ही गर्वित व संतुष्ट होकर बैठे हैं?

हनुमान गढ़ी ही एक ऐसा क्षेत्र लगा जहां कुछ हलचल दिखाई दी पर बंदरों के आतंक से वह भी निरापद नहीं है। राम जन्मभूमि को प्रत्यक्ष देने की इच्छा पूर्ण करने के लिए अभूतपूर्व सुरक्षा चक्रों व लाइनों के बीच से गुजरना हुआ। भगवान राम के एक सांकेतिक पर पूर्ण रूप से सुरक्षित 'विग्रह' को देखकर एक अपूर्व आत्मसम्मान व आत्म विश्वास की हर मन में दौड़ गई। तत्पश्चात् जन्मभूमि न्यास कार्यशाला में संकलित तराशे हुए पत्थरों तथा पूजित राम शिलाओं के ढेर को देखकर एक निराशा हुई कि पता नहीं भविष्य में कब तक इन शिलाओं को प्रतिष्ठित होने के लिए प्रतीक्षा करनी होगी।

कारसेवकपुरम में प्रस्तावित मंदिर का भव्य प्रारूप देखकर पुन: एक बार मन स्वप्न देखने को बाध्य हो गया। न्यायालय द्वारा इसी स्थान को जन्मभूमि के रूप में पुष्टि करने के बाद भी देश की वर्तमान कपटपूर्ण राजनीति के कारण वहां एक भव्य स्मारक बनने का मार्ग प्रशस्त न होना कितना दुर्भाग्यपूर्ण व खेदजनक है। पांच सौ वर्षों के रक्त रंजित इतिहास व असंख्य बलिदान भी हिन्दू समाज को उसका खोया स्वाभिमान आज भी पुन: प्राप्त नहीं करा पाये हैं। किसी भी देश के प्रचंड बहुसंख्यक समाज की इतनी उपेक्षा, अपमान व दुर्दशा का शायद सम्पूर्ण विश्व में कोई दूसरा उदाहरण न होगा। सारी दुनिया हमारी इस मूर्खतापूर्ण विसंगति पर शायद हंस रही है। फीजी व गुयाना जैसे छोटे-छोटे देश भी अपने मूल निवासियों की अस्मिता की उपेक्षा नहीं करते।

सरयू का वह खूनी पुल भी देखा जो कारसेवकों पर मुलायम सिंह यादव सरकार की अंधाधुंध फायरिंग से रक्तरंजित हो गया था। बताया गया था कि जघन्य हत्याकांड के साक्ष्य नष्ट करने हेतु मृतक कारसेवकों के शरीर पर पत्थर बांधकर नदी में फेंक दिया गया था। किसी स्वतंत्र देश में अपने ही शासकों द्वारा अपनी जनता का इतना निर्मम नरसंहार क्या दूसरा कोई उदाहरण संसार में मिल सकता है।

धर्म निरपेक्षता का बाना ओढ़कर धर्म के आधार पर घोर पक्षपातपूर्ण व कायरतापूर्ण आचरण निरन्तर करके, हमारे देश की स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी सभी सरकारों ने आज तक देश के बहुसंख्यक समाज के प्रति द्रोह की अद्वितीय मिसाल पेश की है। पुल के नीचे से प्रवाहित पुण्य सलिला सरयू नदी अबाध गति से इस समस्त इतिहास की मूक साक्षी बनकर कलकल बह रह रही थी। इतना विस्तृत पाट इस नदी का है और इतना शान्त व सुरम्य वातावरण इसके किनारे पर आज भी है, तो कल्पना कर सकते हैं कि भगवान राम के समय में तो कैसा स्वर्गिक रहा होगा।

नदी से ही पम्पों द्वारा पानी उठाकर कृत्रिम घाट 'राम की पैड़ी' बनाया है जो नवनिर्माण के कारण तो आकर्षक लगता है पर ठहरे हुए पानी के कारण स्नान योग्य प्रतीत नहीं होता। प्रशासन की बुद्धि पर इस घाट को देखकर तरस ही आता है कि क्यों नहीं उन्होंने इसको नदी के समानान्तर नहीं बनाया जिससे जल भी निरन्तर प्रवाहित रहता। सुविधा व शुचिता दोनों ही सुनिश्चित हो सकती थीं। हरिद्वार जैसी 'हर की पैड़ी' तो बनानी चाही पर बुद्धि का प्रयोग नहीं हुआ।

इस सारे निराशाजनक वातावरण में दो तीन अन्य सुखद अनुभव भी आये। छावनी क्षेत्र में सेना द्वारा निर्मित व संरक्षित श्रीराम मंदिर का भव्य एवं विस्तृत प्रांगण एक अजीब शान्ति का संदेश दे रहा था। अयोध्या से कुछ दूर पर स्थित नन्दीग्राम जो महाराज भरत की तपोस्थली थी एवं उनके व श्री हनुमान जी के मिलाप की साक्षी थी, अत्यन्त ही शान्ति प्रदान करने वाला क्षेत्र प्रतीत हुआ। सुखद आश्चर्य यह देखकर भी हुआ कि वहां स्थित प्राचीन वट वृक्ष की अन्य जड़ें जो सामान्यत: लटकती रहती हैं, वह अपवाद स्वरूप मुख्य शाखाओं से ही लिपटी जा रही थीं। वास्तव में ही उस क्षेत्र का पुण्य प्रताप है कि स्नेह व मिलाप का संकेत प्रकृति भी दे रही थी। उपेक्षित पड़ा हुआ एक सरोवर आज भी कमल-दल के साथ अत्यन्त मनोहारी है। वास्तुकला का उदाहरण सूरजकुंड देखकर हर्ष हुआ।

कनक महल देखकर आनन्द हुआ। मुसलमानों द्वारा कई बार तोड़े जाने पर भी हिन्दू राजाओं के सौजन्य से यह भव्य प्रांगण पूरी गरिमा के साथ आज भी स्थित हैं अंग्रेजों ने इसको संरक्षित करने का प्रयास किया। इतिहास इस बात को बताता है कि मुस्लिम आक्रांताओं ने क्रूरतापूर्वक केवल विध्वंस किया पर ब्रिटिश शासन ने संरक्षण व निर्माण कार्य भी किया।

एक मन्थन : स्वाभाविक रूप से इस प्रवास के अनन्तर मन में चिन्तन उठा कि प्राचीनतम् नगरी जिसके स्मरण मात्र से ही दूर रहने वाले जन-जन के मन में एक श्रद्धा का भाव मन में जगता हो, उसकी ऐसी दुर्दशा क्यों है। वहां के स्थानीय निवासियों की सर्वथा उदासीन प्रवृत्ति एवं उत्साहहीन जीवन का कारण क्या हो सकता है।

जिस जन्मभूमि के विषय को लेकर सारा देश उद्वेलित, प्रयासरत व प्रतीक्षामग्न हो, उसी विषय के प्रति स्थानीय जनों की सर्वथा उदासीनता भी घोर आश्चर्य का विषय है। पूछने पर कुछ ने वहां गत दशक में हुए निरन्तर संघर्ष के कारण जनजीवन एवं व्यापार आदि में व्याप्त अस्त-व्यस्तता को इस वितृष्णा का कारण बताया। सोचने पर लगा कि यह तो केवल अपनी निष्क्रियता को छिपाने का एक बहाना मात्र ही हैं वर्तमान के संघर्ष से पूर्व भी जब निरन्तर शान्ति थी तब वहां क्या प्रगति हुई इसका कोई उत्तर नहीं। निकटस्थ नगर फैज़ाबाद में अपेक्षाकृत कुछ विकास व सम्पन्नता के चिह्न दृष्टिगोचर हुए फिर अयोध्या ही क्यों अभिशप्त है।

जिस विवादित ढांचे को लेकर 1528 से आज तक अनेकों संघर्ष हुए और असंख्य वीरों का बलिदान हुआ, वह कलंक एवं अपमान का प्रतीक ढांचा यदि कारसेवकों के अथाह सैलाब में बह गया तो इसमें अप्रत्याशित, अशोभनीय या लज्जास्पद कौन सी बात हो गई जो हमारे हिन्दू समाज के ही शीर्षस्थ नेताओं को द्रवित कर रही है। कांग्रेस के नेताओं को इसमें अपना अपमान दिखना तो स्वाभाविक है परन्तु श्री अटल जी व श्री आडवाणी जी जैसे मूर्धन्य नेताओं को भी शर्म के सिर झुकाना पड़ रहा हो यह बात समझ से परे है। संभवत: देश में व्याप्त विकृत राजनीति के प्रभाव से परे नहीं रह पाये हैं ये भी, जिनकी स्वयं की राष्ट्रभक्ति व कर्तव्यनिष्ठा यद्यपि असंदिग्ध है।

इस प्रकरण में दोषी तो न्यायालय ही थे जिन्होंने स्थिति की गंभीरता की अनदेखी कर बिना किसी कारण के निर्णय को स्थगित कर, वहां उपस्थित अथाह जनसमूह को विचलित कर दिया। किंकर्तव्यविमूढ़ता की स्थिति में जो भी परिणाम हुआ वह स्वाभाविक ही था। कोई नेता ऐसे प्रबल जनप्रवाह को रोकने या नियंत्रित करने की सामर्थ्य नहीं रख सकता। बल्कि रोकने का प्रयास भी करता तो संभवत: जन-प्रकोप का शिकार ही बनता। ऐसी अप्रत्याशित भवितव्य के कारण भी यदि हमारा राष्ट्रवादी नेतृत्व संतुलित सोच नहीं रखता तो निश्चय ही विकृत राजनीति का शिकार है और हर प्रकार से ही निन्दनीय भी।

कुछ सुझाव : मेरे विचार में अब हिन्दू समाज को यही खड़े न रहकर कुछ आगे बढ़ना चाहिए। जन्मभूमि पर भव्य मंदिर निर्माण का कार्य तो न्यायालय के स्पष्ट निर्णय से पूर्व हो ही नहीं सकता और जो भी विग्रह वहां है उसकी सुरक्षा शासन करने को बाध्य है। अत: जब तक यह गुत्थी सुलझे आवश्यकता इस बात समझनी चाहिए कि सम्पूर्ण अयोध्या नगरी को ही एक पवित्र एवं जीवन्त तीर्थ स्थान के रूप में विकसित किया जाये।

मंदिर तो अब देर-सवेर बनेगा ही पर क्या वर्तमान में दृश्यमान दयनीय नगरी में वह कुछ शोभा पा सकेगा? विश्व हिन्दू परिषद को केवल मंदिर की ही प्रतीथा में हाथ पर हाथ रखकर बैठने की बजाय मंदिर के स्वागत में संपूर्ण नगर के विकास की योजना बनाकर ठोस कार्य में जुट जाना चाहिए। यह एक आश्वस्त भविष्य का दृढ़ व स्पष्ट संकेत भी होगा।

अयोध्या नगरी के नाम से ही जिस श्रद्धा का मन में उदय होता है वैसी ही एक श्रद्धेय नगरी को मूर्त रूप देने में जुट जाना ही हमारा कर्तव्य बन जाता है। घाटों का विकास, मंदिरों का जीर्णोद्धार, भक्तों की सुविधाओं की व्यवस्था और बंदरों के आतंक से मुक्ति यह कुछ ऐसे कार्य हैं जिनका योजनाबद्ध तरीके से कार्यान्वयन, सम्पूर्ण अयोध्या नगरी को उसकी ऐतिहासिक गरिमा में पुन: प्रतिष्ठित कर एक हिन्दू समाज के आकर्षण का केन्द्र बनायेगा। तीर्थ यात्रियों के आवागमन से नगर में व्यापारिक गतिविधियों में वृद्धि, रोजगार के अवसर व एक उत्साहजनक वातावरण के निर्माण होने से स्थानीय जनों की वर्तमान उपेक्षा, उदासीनता व असहयोग का शनै: शनै: ह्रास होकर सहयोग व उत्साह का वातावरण बनेगा। हिन्दू यात्रियों का अधिक संख्या में आवागमन, जन-जन के आत्मविश्वास में वृद्धि करेगा एवं शत्रुओं के मनोबल का गिरायेगा।

हमें स्मरण रखना चाहिए कि अब अयोध्या में तो न्यायालय के स्पष्ट निर्णय के बाद जन्मभूमि को लेकर तो कोई हिसंक संघर्ष की भविष्य में अब संभावना नहीं है। हिन्दू समाज तो विजयी हो ही चुका है अत: उसे तो अब केवल भविष्य की तैयारी में ही जुट जाना चाहिए। कलंक का प्रतीक अस्तित्वहीन हो चुका है और जन्मस्थान की कानूनी पुष्टि भी हो गई है। अब तोकेवल समय की बात है। राष्ट्र जीवन में इतना धैर्य तो अपेक्षित ही है। अतीत से प्रेरणा लेकर वर्तमान को व्यवस्थत करना एवं भविष्य का मार्ग प्रशस्त करना ही हमारे लिए अभीष्ट है। अयोध्या का अर्थ ही है–अ+योध्या अर्थात् जिसको युद्ध में कोई न जीत सके।

अब न रुकने की जरूरत है और ही संघर्ष की। जरूरत है उत्साहपूर्वक इस पवित्र नगरी को इसके प्राचीन गौरव की पुन: प्रतिष्ठा कराने की।

बी-5/108, सफदरजंग एन्क्लेव, नई दिल्ली-110029

डॉ. अमिता चौहान एवं डॉ. अशोक कुमार चौहान के सान्निध्य में

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् का ग्रीष्मकालीन अवकाश में

राष्ट्रीय शिविर

युवक चरित्र निर्माण व व्यक्तित्व विकास शिविर

दिनांक 11 जून से 19 जून 2011 तक

स्थान : ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल, सैक्टर-44, नोएडा, उ.प्र.

अपने बच्चों को संस्कारित करने, देशभक्त बनाने व उनके सर्वांगीण विकास हेतु शिविर में अवश्य भेजें। कक्षा 6 से 12 तक के विद्यार्थी भाग ले सकते हैं। इच्छुक युवक 150 रुपये शिविर शुल्क सहित अपना स्थान शीघ्र आरक्षित करवा लें। सभी शिविरार्थी शनिवार, 11 जून को सायं 4 बजे पहुंच जायें। सम्पर्क सूत्र : देवेन्द्र भगत, मो. 9312406810, रामकुमारसिंह आर्य, मो. 9868064422, दुर्गेश आर्य, मो. 9868664800, प्रवीन आर्य, 9911404423, सन्तोष शास्त्री, मो. 9868754140

दानी महानुभावों की सेवा में अपील

शिविर एक रचनात्मक आन्दोलन है, सभी दानी महानुभाव उदारतापूर्वक सहयोग दें व ऋषि लंगर के लिए आटा, दाल, चावल, चीनी, सब्जी, मसाले, रिफाइंड, देसी घी, आदि खाद्य सामग्री देकर पुण्य के भागी बनें। समस्त क्रास चैक/ड्राफ्ट 'केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली' के नाम से कार्यालय, आर्यसमाज कबीर बस्ती, पुरानी सब्जी मंडी, दिल्ली-110007 के पते पर भिजवायें।

–: निवेदक :–

डॉ. अनिल आर्य	महेन्द्र भाई	धर्मपाल आर्य
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महामन्त्री	राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष

अग्निहोत्री धर्मार्थ ट्रस्ट के तत्वावधान में

मूर्धन्य आर्य संन्यासी स्वामी दीक्षानन्द जी के आठवें स्मृति दिवस पर

प्रेरणा दिवस

रविवार, 15 मई 2011, सायं 4 से 7.30 बजे तक

स्थान : हिन्दी भवन सभागार, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, आई.टी.ओ., नई दिल्ली-110002

कार्यक्रम

ध्वजारोहण	:	श्री आनन्द चौहान (प्रधान, आर्य समाज, डिफेंस कॉलोनी)
अध्यक्षता	:	श्री रामनिवास लखोटिया (सुप्रसिद्ध समाजसेवी व टैक्स डॉक्टर)
मुख्य अतिथि	:	माननीय डॉ. योगानन्द शास्त्री (अध्यक्ष, दिल्ली विधानसभा)
मुख्य वक्ता	:	डॉ. महेश विद्यालंकार, डॉ. वागीश आचार्य, डॉ. राज बुद्धिराजा
दीप प्रज्जवलन	:	माननीय श्री बृजमोहन मुंजाल (चेयरमैन हीरो होंडा)
विशिष्ट अतिथि	:	शिक्षाविद् डॉ. अशोक कुमार चौहान, श्री योगेश मुंजाल, कै. रुद्रसेन सन्धु, डॉ. डी.के. गर्ग, दीपक भारद्वाज, नवीन रहेजा, सत्यानन्द आर्य, योगराज अरोड़ा, राजेन्द्र भटनागर
आशीर्वाद	:	स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती व स्वामी धर्ममुनि जी 'दुग्धाहारी'
मधुर भजन	:	श्री सुचित नारंग (देहरादून), कु. सुकृति भटनागर
ऋषि लंगर	:	सायं 7.30 बजे
प्रबन्धक	:	प्रभा सेठी, यशोवीर आर्य, विश्वनाथ आर्य, शंकर देव आर्य

गुरुदेव को श्रद्धांजलि देने आप सपरिवार आमंत्रित हैं।

–: निवेदक :–

दर्शन अग्निहोत्री	सरोज अग्निहोत्री	डॉ. अनिल आर्य	सुनील रहेजा
अध्यक्ष	ट्रस्टी	संयोजक	स्वागताध्यक्ष

केन्द्रीय आर्य युवती परिषद् दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान में

आर्य कन्या चरित्र निर्माण शिविर

रविवार 22 मई 2011 से रविवार 29 मई 2011 तक

स्थान : आर्य समाज, रमेश नगर, नई दिल्ली-15

उद्घाटन : रविवार 22 मई 2011, प्रातः 11 बजे

समापन : रविवार 29 मई, सायं 5 से 7.30 बजे

अपनी बच्चियों को साहस, स्व-सुरक्षा एवं स्वावलम्बन की भावना से ओत-प्रोत करने के लिए अवश्य भेजें। **सम्पर्क :** 9871601122, 9899555280

–: निवेदक :–

नीता खन्ना	प्रभा सेठी	अर्चना पुष्करणा	आदर्श सहगल
प्रान्तीय प्रभारी	अध्यक्षा	महामन्त्री	वरिष्ठ सचिव
नरेन्द्र आर्य सुमन	**सत्यपाल नारंग**	**नरेश विज**	**कान्ता हसीजा**
प्रधान	मंत्री	शिविर प्रबंधक	प्रधाना समाज

द्वारका में रामनवमी पर भजन संध्या सम्पन्न

वेदार्ष महाविद्यालय स्नातक परिषद् एवं भारतीय संस्कृति विकास परिषद्, द्वारका, नई दिल्ली के तत्वावधान में मंगलवार 12 अप्रैल, 2011 को स्वामी प्रणवानन्द जी के सानिन्ध्य में भजनसंध्या व सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। सांसद श्री रमेश कुमार, विधायक धर्मदेव सोलंकी, परिषद् के महामंत्री महेन्द्रभाई, प्रान्तीय संचालक श्री रामकुमार सिंह, श्री प्रकाशवीर शास्त्री आदि भी सम्मिलित हुए। श्री कंचन कुमार के मधुर भजन हुए। समारोह का संचालन श्री जीवन प्रकाश शास्त्री ने किया।

उत्तर-पश्चिमी आर्य कार्यकर्ता बैठक

रविवार, दिनांक 1 मई 2011, प्रातः 11 बजे

स्थान : आर्य समाज सन्देश विहार, दिल्ली-34

सभी साथी समय पर पहुंचें

–दुर्गेश आर्य, संयोजक, मो. 9873697712

उत्तर प्रदेश प्रान्तीय आर्य कार्यकर्ता बैठक

रविवार, दिनांक 1 मई 2011, सायं 4 बजे

स्थान : आर्य समाज, नया आर्य नगर, मेरठ रोड, गाज़ियाबाद

सभी साथी समय पर पहुंचें

–प्रवीण आर्य, संयोजक, मो. 9911404423

मानसरोवर पार्क में यज्ञ सम्पन्न हुआ

रविवार, 3 अप्रैल, 2011, वैदिक यज्ञ समिति, मानसरोवर पार्क, शाहदरा, दिल्ली के तत्वावधान में दिव्यानन्द जी महाराज (हरिद्वार) के सान्निध्य में योग साधना शिविर व यज्ञ सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। उपरोक्त चित्र में डॉ. अनिल आर्य का स्वागत करते महेन्द्र भाई, विकास शर्मा व माता सुषमा यति आदि अधिकारीगण।

आर्य समाज नरेला का उत्सव सम्पन्न

रविवार, 3 अप्रैल 2011, आर्य समाज, नरेला, दिल्ली के तत्वावधान में स्वामी ओमानन्द जी महाराज का जन्म शताब्दी समारोह बड़े ही भव्य रूप से शानदार सफलता के साथ मनाया गया। समारोह के मुख्य अतिथि डॉ. योगानन्द शास्त्री ने स्वामी ओमानन्द जी के जीवन मूल्यों को धारण करने का आह्वान किया। परिषद् अध्यक्ष डॉ. अनिल आर्य को स्मृति चिह्न देकर अभिनन्दन किया गया। प्रधान श्री राजसिंह आर्य, म. पूर्णसिंह आर्य, हेमचन्द बंसल, राजपाल आर्य, रामपाल आर्य आदि के पुरुषार्थ से समारोह सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ।

लखनऊ में 101 कुण्डीय यज्ञ के साथ केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् का सम्मेलन शानदार सफलता के साथ सम्पन्न

श्री विमल किशोर आर्य को सम्मानित करते श्री राजकिशोर शास्त्री व डॉ. अनिल आर्य, द्वितीय चित्र में लखनऊ शाखा के महामन्त्री श्री राजकिशोर शास्त्री को सम्मानित करते जिला अध्यक्ष कमलाकान्त त्रिवेदी, आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, स्वामी गुरुकुलानन्द कच्चाहारी व डॉ. अनिल आर्य। तृतीय चित्र में संबोधित करते डॉ. अनिल आर्य।

लखनऊ, 12 अप्रैल, 2011, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् लखनऊ उ.प्र. के छटे वार्षिकोत्सव व रामनवमी पर्व का भव्य आयोजन दिनांक 11.12.13 व 14 अप्रैल 2011 को गुरुश्रद्धा पब्लिक स्कूल बन्थरा, लखनऊ के सामने खुले मैदान किया गया। इस अवसर पर समारोह के मुख्य अतिथि परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अनिल आर्य ने आह्वान किया कि मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम के सन्देश को जन-जन तक पहुंचाने की आवश्यकता है। परिषद् के राष्ट्रीय बौद्धिकाध्यक्ष आचार्य गवेन्द्र शास्त्री ने भगवान राम के चरित्र को जीवन में धारण करने की प्रेरणा दी। सभा का संचालन जिला महामंत्री श्री राजकिशारे शास्त्री ने किया। जिला अध्यक्ष कमलाकांत त्रिवेदी, पत्रकार विमल किशोर आर्य, स्वामी गुरुकुलानन्द जी पिथौरागढ़, स्वामी सौम्यानन्द सरस्वती, ठा. विजय सिंह मानव, डॉ. संतोष वेदालंकार, डॉ. रामगोपाल आर्य, पं. रंजना तिवारी, डॉ. एस.एस. शुक्ला, मा. राधेलाल यादव, डॉ. अजय दत्त शर्मा आदि ने अपने विचार रखे। विभिन्न जनपदों में परिषद् की शाखाएं खोलने का संकल्प लिया गया।

हापुड़ आर्य समाज का 121वां स्थापना वार्षिकोत्सव सम्पन्न

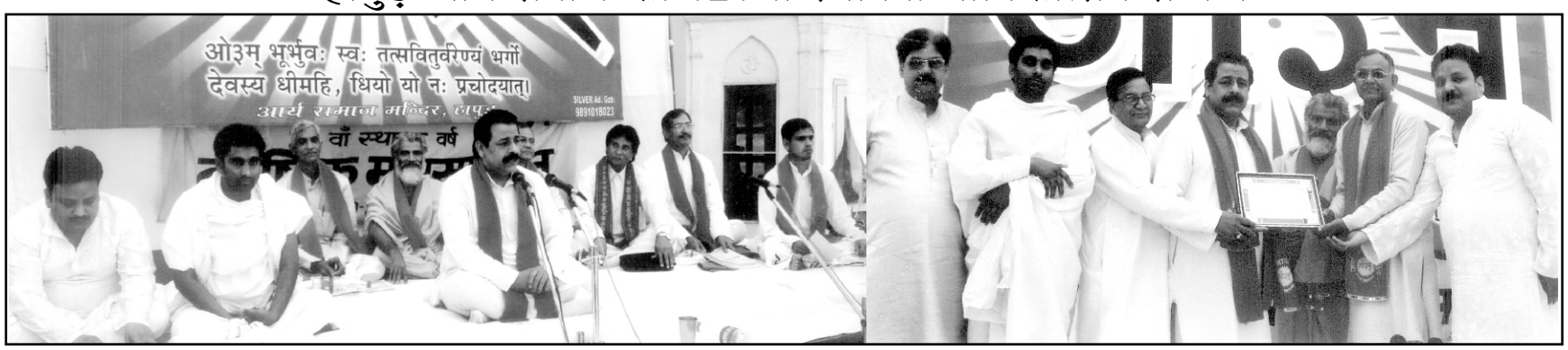

युवा उत्थान सम्मेलन में मुख्य अतिथि डॉ. अनिल आर्य सम्बोधित करते हुए, द्वितीय चित्र में डॉ. अनिल आर्य को सम्मानित करते प्रधान श्री आनन्द प्रकाश आर्य, स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, डॉ. वेदप्रकाश जी (गुरुकुल कांगड़ी) व अनुपम आर्य आदि।

उत्तर प्रदेश की प्रमुख आर्य समाज, हापुड़ का 121वां स्थापना उत्सव दिनांक 9, 10, 11, 12 अप्रैल 2011 को सौल्लास मनाया गया। दिल्ली से परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अनिल आर्य, महामन्त्री महेन्द्र भाई, प्रान्तीय संचालक रामकुमार सिंह, बौद्धिकाध्यक्ष आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, शिशुपाल आर्य, डॉ. रघुवीर वेदालंकार, बहन संध्या बजाज आदि के उद्बोधन हुए। विशाल शोभायात्रा में परिषद् के शिक्षक सौरभ गुप्ता, महामन्त्री प्रवीन आर्य के निर्देशन में भव्य व्यायाम प्रदर्शन किया गया। समाज के प्रधान श्री आनन्द प्रकाश आर्य, मन्त्री विजेन्द्र कुमार गर्ग, नरेन्द्र आर्य (मंत्री जिला सभा) के पुरुषार्थ से समारोह शानदार सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।

डॉ. कथूरिया की कृति 'वैदिक चिन्तनधारा' पुरस्कृत

प्रख्यात साहित्यकार व लेखक डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया के ग्रन्थ वैदिक चिन्तनधारा को 'लाला चतुरसेन गुप्त आर्य साहित्य पुरस्कार-2011' से पुरस्कृत किया गया है। पुरस्कार स्वरूप उन्हें प्रशस्तिपत्र एवं सम्मानराशि का चैक ओम प्रतिष्ठान के अध्यक्ष श्री मूलचन्द गुप्त ने भेंट किया।

रोहिणी में रही वेद प्रचार की धूम

रविवार, 6 अप्रैल 2011, वैदिक सत्संग सभा, सैक्टर-11, रोहिणी, दिल्ली के तत्वावधान में वेद प्रचार कार्यक्रम का भव्य आयोजन किया गया। आचार्य सत्यवीर शर्मा, प्रो. सारस्वत मोहन मनीषी, श्री शिवनारायण शास्त्री के प्रेरक प्रवचन हुए। इस अवसर पर शाल व शील्ड से अभिनन्दन करते श्री सूरज गुलाटी (संयोजक), मंडल के महामंत्री दुर्गाप्रसाद कालरा व राजीव आर्य। श्रीमती उर्मिला आर्या, विजय आर्य, सुरेन्द्र गुप्ता, अरविन्द आर्य आदि के पुरुषार्थ से समारोह सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

आर्य समाज मदनगीर का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

रविवार, 3 अप्रैल 2011, आर्य समाज मदनगीर, नई दिल्ली का 37वां वार्षिकोत्सव सौल्लास सम्पन्न हुआ। परिषद् अध्यक्ष डॉ. अनिल आर्य सम्बोधित करते हुए। आर्य नेता पुरुषोत्तम गुप्ता, चतरसिंह नागर, महावीर शास्त्री, आचार्य अरविन्द गार्गी, आचार्य शतक्रतु, कवि विजय गुप्ता, देशपाल सिंह राठौर आदि के उद्बोधन हुए। प्रधान श्री हरिचन्द आर्य व मंत्री श्री अनन्तराम आर्य ने आभार व्यक्त किया।

शोक समाचार

-आर्य पत्रकार, लेखक श्री अशोक कौशिक (विकासपुरी, दिल्ली) का गत दिनों निधन हो गया।

-श्री विनोद दुर्गा (श्री राजेन्द्र दुर्गा के छोटे भाई) का गत दिनों निधन हो गया।

-श्री कन्हैयालाल आर्य (संस्थापक संरक्षक, आर्य समाज, बुराड़ी, दिल्ली) का गत दिनों निधन हो गया।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् की ओर से दिवंगतों के निधन पर विनम्र श्रद्धांजलि। **-सम्पादक**

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मयंक प्रिंटर्स**,2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548504 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, शंकरदेव आर्य, मोबाइल : 09424840057, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9910649696